Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) ____________________________
   (Name) ______________________________
2. (Signature) ____________________________
   (Name) ______________________________

Roll No. | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No.______________________________

(In words)

Test Booklet No.

J	7	3	1	0

Time : $2\ ^1/_2$ hours] **PAPER-III** [Maximum Marks : **200**

SANSKRIT TRADITIONAL SUBJECTS

Number of Pages in this Booklet : **32** Number of Questions in this Booklet : **26**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे ।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
8. **केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पैन का ही इस्तेमाल करें ।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।**

संस्कृत परम्परागत विषय:

SANSKRIT TRADITIONAL SUBJECT

प्रश्नपत्रम् – III

प्रश्नपत्र – III

PAPER – III

टिप्पणी : अस्य प्रश्नपत्रस्य **शतद्वयम् (200)** अङ्का: सन्ति, एवम् अस्मिन् **चत्वारि** खण्डानि सन्ति । अभ्यर्थिभि: एषु समाहितानां प्रश्नानामुत्तरं पृथग्विहितविस्तृतनिर्देशानुसारं देयम् ।

नोट : यह प्रश्नपत्र **दो सौ (200)** अंकों का है एवं इसमें **चार (4)** खण्ड हैं । अभ्यर्थियों को इनमें समाहित प्रश्नों के उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है ।

Note : This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

खण्डम् – I
खण्ड – I
SECTION – I

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे **विंशत्यङ्कात्मकौ** निबन्धश्रेणीकौ प्रश्नौ स्त:, ययो: उत्तरं प्राय: **पञ्चशतमितै: (500)** शब्दैरपेक्ष्यते । **(2 × 20 = 40 अङ्का:)**

नोट : इस खंड में **बीस-बीस** अंकों के दो निबन्धात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक का उत्तर लगभग **पाँच सौ (500)** शब्दों में अपेक्षित है । **(2 × 20 = 40 अंक)**

Note : This section consists of two essay type questions of **twenty (20)** marks each, to be answered in about **five hundred (500)** words each. **(2 × 20 = 40 marks)**

1. संस्कृतभाषया कमप्येकं विषयमाश्रित्य निबन्धो लेखनीय:

   (क) लोकतन्त्री शासनव्यवस्था ।

   (ख) भारतस्य प्रगतौ स्त्रीणां योगदानम् ।

   (ग) संस्कृतवाङ्मयवैभवम् ।

2. संस्कृतभाषया कमप्येकं विषयमाश्रित्य निबन्धो लेखनीय:

(क) उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि ।

(ख) गुणा: पूजास्थानम् ।

(ग) पुराणमित्येव न साधु सर्वम् ।

खण्डम् – II
खण्ड – II
SECTION – II

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे प्रत्येकम् ऐच्छिकवर्ग: / विशेषज्ञता अनुसारं **त्रय: (3)** प्रश्ना: सन्ति । अभ्यर्थिना केवलमेकमेव ऐच्छिकवर्गं / विशेषज्ञताम् आश्रित्य तस्मादेव त्रय: प्रश्ना: समाधेया: । प्रत्येकं प्रश्न: **पञ्चदशाङ्कात्मक: (15)** अस्ति । तदुत्तरं प्राय: **शतत्रयशब्दै: (300)** अपेक्ष्यते ।

(3 × 15 = 45 अङ्का:)

नोट : इस खण्ड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से **तीन (3)** प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता को चुनकर उसी के तीनों प्रश्नों के उत्तर देना है । प्रत्येक प्रश्न **पन्द्रह (15)** अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **तीन सौ (300)** शब्दों में अपेक्षित है ।

(3 × 15 = 45 अंक)

Note : This section contains **three (3)** questions from each of the electives/specializations. The candidate has to choose only one elective/specialization and answer all the three questions from it. Each question carries **fifteen (15)** marks and is to be answered in about **three hundred (300)** words.

(3 × 15 = 45 marks)

I. फलितज्योतिषम् ।

3. लग्नायुर्दायसाधनम् सोदाहरणं प्रदर्श्यताम् ।

लग्नायुर्दाय साधन को सोदाहरण प्रदर्शित कीजिए ।

Show लग्नायुर्दायसाधन with example.

4. नाभसयोगानाम् नामानिविलिख्य नौकूटछत्रचाप योगा: विवेचनीय: ।

नाभसयोग का नाम लिखकर नौ कूट छत्र चाप योगों का विवेचन कीजिए ।

Write the names of नाभसयोग and critically examine नौकूटछत्रचापयोग.

5. कल्पितोदाहरणे विंशोत्तरी दशा साधन प्रकार: प्रदर्शनीय: ।

कल्पितोदाहरण से विंशोत्तरी दशा साधनप्रकार को प्रदर्शित करें ।

Show how विंशोत्तरीदशा is to be determined with a hypothetical example.

II. सिद्धान्तज्योतिषम् ।

3. उदयान्तरसाधनं प्रस्फुटीक्रियताम् ।

उदयान्तर का साधन स्पष्ट कीजिए ।

Clearly explain उदयान्तरसाधन.

4. कल्पितोदाहरणेन लग्नानयनं प्रदर्श्यताम् ।

कल्पित उदाहरण द्वारा लग्न का आनयन प्रदर्शित कीजिए ।

Show लग्नायन with a hypothetical example.

5. चन्द्रग्रहणमधिकृत्य निबन्ध: प्रस्तूयताम् ।

चन्द्रग्रहण विषय पर निबन्ध प्रस्तुत कीजिए ।

Write an essay on चन्द्रग्रहण.

III. व्याकरणम् ।

3. ध्वनिस्फोटयो: सम्बन्ध: सम्यक् निरूपणीय: ।

ध्वनि एवं स्फोट का सम्बन्ध भली प्रकार निरूपित कीजिए ।

Determine the relation between ध्वनि and स्फोट.

4. व्याख्यायताम्

व्याख्या कीजिए ।

Explain

फलव्यापारयोर्धातु: ।

5. कृत्यप्रत्ययानां सोदाहरणं विवरणं दीयताम् ।

कृत्य प्रत्ययों का उदाहरण सहित विवरण दीजिए ।

Give an account of कृत्य suffixes with examples.

IV. मीमांसा ।

3. अपूर्वविधे: लक्षणं सोदाहरणं विवेचयत ।

अपूर्वविधि का लक्षण सोदाहरण विचार कीजिए ।

Examine the definition of अपूर्वविधि with example.

4. अभिहितान्वयवादं विवेचयत ।

अभिहितान्वयवाद का विवेचन कीजिए ।

Critically examine अभिहितान्वयवाद.

5. यागशब्दस्यार्थं विलिख्य विष्णुयागविधिं लिखत ।

याग शब्द का अर्थ लिखकर विष्णुयाग की विधि लिखिए ।

Write the meaning of the word याग and give the rules for विष्णुयाग.

V. नव्यन्याय: ।

3. अभावस्याधिकरणात्मकत्वं निरस्यताम् ।

अभाव की अधिकरणात्मकता को निरस्त कीजिए ।

Refute the view that अभाव is identical with its locus.

4. उत्पत्तिपक्षे परत:प्रामाण्यवादमुपपादय ।

उत्पत्ति पक्ष में परत: प्रामाण्यवाद का उपपादन कीजिए ।

Explain परत:प्रामाण्य with reference to origination.

5. शरीरस्य चैतन्यं सम्भवति न वेति विचार्यताम् ।

शरीर की चैतन्यता सम्भव है अथवा नहीं ? विचार प्रस्तुत कीजिए ।

Examine critically whether consciousness may belong to the body.

VI. सांख्ययोगौ ।

3. सांख्याभिमतं प्रधानं विवृणुत ।

सांख्याभिमत प्रधान का विवरण कीजिए ।

Explain प्रधानं according to Sāṅkhya.

4. सांख्यमतानुसारेण मोक्षं विचारयत ।

सांख्यमत के अनुसार मोक्ष का विचार कीजिए ।

Elaborate the concept of मोक्ष: according to Sāṅkhya.

5. योगदर्शनानुसारेण असंप्रज्ञातसमाधिं विवृणुत ।

योगदर्शन के अनुसार असंप्रज्ञातसमाधि का विवरण कीजिए ।

Explain असंप्रज्ञातसमाधि: according to Yogadarśana.

VII. तुलनात्मकं दर्शनम् ।

3. प्रमाणानां विषये मीमांसकानां मतं निरूपयत ।

प्रमाणों के विषय में मीमांसकों का मत निरूपित कीजिए ।

Bring out the epistomological position of मीमांसकाs.

4. स्याद्वाद – एकान्तवादयो: तारतम्यौ विशदयत ।

स्याद्वाद और एकान्तवाद का तारतम्य सविशद लिखें ।

Explain similar as well as dissimilar aspects between स्याद्वाद and एकान्तवाद.

5. ख्यातिपञ्चकं सोपपत्तिकं विशदयत ।

ख्यातिपञ्चक को सोपपत्तिक सविशद लिखें ।

Elucidate ख्यातिपञ्चक with illustrations.

VIII. शुक्लयजुर्वेद: ।

3. शुक्लयजुर्वेदानुसारं राजनैतिकविचारधारां प्रतिपादयत ।

शुक्लयजुर्वेद के अनुसार राजनैतिक विचारधारा का प्रतिपादन करें ।

Discuss the administrative measures of the King according to शुक्लयजुर्वेद.

4. वेदकालनिर्णयं कुरुत ।

वेदों का काल निर्णय कीजिए ।

Determine the age of the Veda.

5. पारस्करगृह्यसूत्रोक्तदिशा उपनयनविधिं प्रतिपादयत ।

पारस्करगृह्यसूत्रानुसार उपनयनविधि का प्रतिपादन कीजिए ।

Explain the rules of उपनयन according to पारस्करगृह्यसूत्र.

IX. माध्ववेदान्त: ।

3. आगमानामपौरुषेयत्वं द्वैतदिशा स्थापयत ।

आगमों की अपौरुषेयता द्वैतमतानुसार स्थापित कीजिए ।

Establish the अपौरुषेयत्व of the Vedas according to Dvaita.

4. तत्त्वमसिमहावाक्यं द्वैतमतानुसारेण निरूपयत ।

तत्त्वमसिमहावाक्य का द्वैतमतानुसार निरूपण कीजिए ।

Explain तत्त्वमसिमहावाक्य according to Dvaita.

5. स्वत:प्रामाण्यवादं माध्वदिशा विमृशत ।

स्वत:प्रामाण्यवाद का माध्वमतानुसार विमर्शन कीजिए ।

Criticise स्वत:प्रामाण्यवाद according to Madhvites.

X. धर्मशास्त्रम् ।

3. धर्मशास्त्रस्योद्भवंविकासञ्च प्रतिपादयत ।

धर्मशास्त्र का उद्भव और विकास प्रतिपादन कीजिए ।

Discuss the origin and development of धर्मशास्त्र.

4. अज्ञानकृतब्रह्मवधप्रायश्चित्तं लिखत ।

अज्ञानकृतब्रह्मवधप्रायश्चित्त पर लिखिए ।

Write about प्रायश्चित्त to be performed on killing a Brahmana unknowingly.

5. पितामहधनविभागकालं विवेचयत ।

पितामहधनविभागकाल पर विचार कीजिए ।

Elaborate upon पितामहधनविभागकाल.

XI. साहित्यम् ।

3. काव्यप्रयोजनानि विशदीकुरुत ।

काव्यप्रयोजनों का विवरण कीजिए ।

Explain the 'काव्यप्रयोजन's.

4. ध्वनिं लक्षयित्वा भेदान् प्रदर्शयत ।

ध्वनि का लक्षण देकर भेदप्रदर्शन कीजिए ।

Define ध्वनि and show different types of Dhvani.

5. 'वक्रोक्ति: काव्यजीवितम्' – समर्थयत ।

'वक्रोक्ति: काव्यजीवितम्' – समर्थन कीजिए ।

'वक्रोक्ति: काव्यजीवितम्' – justify.

XII. पुराणेतिहासौ ।

3. आधुनिकसमाजे पुराणानां उपयोगितां निरूपयत ।

आधुनिक समाज में पुराणों की उपयोगिता निरूपित कीजिए ।

Prove the relevance of Puraṇas in the modern society.

4. पुराणोक्तदिशा मणिद्वीपं वर्णयत ।

पुराणों के अनुसार मणिद्वीप का वर्णन कीजिए ।

Describe मणिद्वीप according to Puranas.

5. विदुरनीतेः वैशिष्ट्यं प्रकाशयत ।

विदुरनीति के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए ।

Elucidate the special features of विदुरनीति.

XIII. आगमः ।

3. आगमिकपरम्परायाः प्रयोजनं वैशिष्ट्यं च विशदयत ।

आगमिक परम्परा के प्रयोजन और वैशिष्ट्य की सविशद चर्चा करें ।

Explain the purpose and significance of the आगमिकपरम्परा ।

4. कौलधर्मस्य प्रधानतत्त्वानि निरूपयत ।

कौलधर्म के प्रधान तत्त्वों का निरूपण करें ।

Give an account of the basic principles of कौलधर्म.

5. आगमानुसारं मोक्षस्वरूपं तत्साधनोपायांश्च विवृणुत ।

आगम के अनुसार मोक्ष का स्वरूप और उसके साधनोपाय का वर्णन करें ।

Elucidate the nature and the means to मोक्ष following the आगमs.

XIV. अद्वैतवेदान्तः ।

3. वेदान्तशास्त्रस्य कः अधिकारी ? विशदयत ।

वेदान्तशास्त्र का अधिकारी कौन है ? विशद कीजिए ।

Who is competent to learn Vedāntásāstra ? Elucidate.

4. अध्यासलक्षणं सोदाहरणं विवृणुत ।

उदाहरण के साथ अध्यासलक्षण का विवरण कीजिए ।

Explain the definition of अध्यासः with suitable examples.

5. पञ्चविद्याः काः ? अद्वैतवेदान्तदिशा विशदयत ।

पाँच विद्यायें कौन हैं ? अद्वैतवेदान्तानुसार विशद कीजिए ।

Which are the five विद्याः ? Explain in accordance with Advaitavedanta.

खण्डम् – III
खण्ड – III
SECTION – III

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे **दशाङ्कात्मकाः (10) नव (9)** प्रश्नाः सन्ति । प्रत्येकं प्रश्नस्य उत्तरं प्रायः **पञ्चाशत् (50)** शब्दैरपेक्ष्यते । **(9 × 10 = 90 अङ्काः)**

नोट : इस खंड में **दस-दस (10-10)** अंकों के **नौ (9)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास (50)** शब्दों में अपेक्षित है । **(9 × 10 = 90 अंक)**

Note : This section contains **nine (9)** questions of **ten (10)** marks, each to be answered in about **fifty (50)** words. **(9 × 10 = 90 marks)**

6. विवाहकाले लग्नभङ्गः कथं भवतीति प्रतिपाद्यताम् ।
विवाह के समय लग्नभग्न कैसे होता है ? प्रतिपादन कीजिए ।
Explain how लग्नभङ्ग occurs at the time of marriage.

7. पितृणां दिनं कियन्मितं भवतीति युक्त्या विविच्यताम् ।

पितरों के दिन का क्या प्रमाण है ? युक्तिपूर्वक विवेचन कीजिए ।

Explain with arguments what is the measure of a day for the पितृs ?

8. हेतुकरणयो: भेद: सम्यक् प्रतिपाद्यताम् ।

हेतु और करण के भेद का सम्यक् प्रतिपादन कीजिए ।

Clearly bring out the difference between हेतु and करण.

9. गृहस्थाश्रमस्य श्रेष्ठत्वं प्रतिपादयत ।

गृहस्थाश्रम का श्रेष्ठत्व प्रतिपादन कीजिए ।

Show that गृहस्थाश्रम is the best आश्रम.

10. पञ्चविंशति तत्त्वानि कानि ? सांख्यदिशोत्तरं लिखत ।

पच्चीस तत्त्वों कौन हैं ? सांख्यानुसार उत्तर लिखिए ।

Which are the twenty-five principles ? Answer in accordance with Sāṅkhya.

11. पुराणं लक्षयित्वा पुराणभेदान् प्रदर्शयत ।

पुराण का लक्षण करके पुराण-भेदों का प्रदर्शन कीजिए ।

Define पुराण and mention the different types of पुराणs.

12. सायणाचार्यस्य परिचयप्रदानं कुरुत ।

सायणाचार्य का परिचय प्रदान कीजिए ।

Give an account of सायणाचार्य.

13. अलङ्काराणां उत्पत्तिविकासौ विवृणुत ।

अलङ्कारों की उत्पत्ति और विकास का वर्णन कीजिए ।

Trace the origin and development of Alaṅkāras.

14. साधनचतुष्टयं विवृणुत ।

साधनचतुष्टय का विवरण कीजिए ।

Explain साधनचतुष्टय ।

खण्डम् – IV
खण्ड – IV
SECTION – IV

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे निम्नाङ्कितानुच्छेदमाश्रित्य **पञ्च (5)** प्रश्ना: सन्ति । प्रत्येकं प्रश्नस्योत्तरं प्राय: **त्रिंशत् (30)** शब्दैरपेक्ष्यते । प्रत्येकं प्रश्न: **पञ्चाङ्क:** अस्ति । **(5 × 5 = 25 अङ्का:)**

नोट : इस खंड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच (5)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस (30)** शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच (5)** अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

Note : This section contains **five (5)** questions of **five (5)** marks each based on the following passage. Each question should be answered in about **thirty (30)** words.

(5 × 5 = 25 marks)

अस्ति कस्मिंश्चित् अधिष्ठाने हरिदत्तो नाम ब्राह्मण:, तस्य च कृषिं कुर्वत: सदा एव निष्फल: काल: अतिवर्तते । अथ एकस्मिन् दिवसे स ब्राह्मण: उष्णकालावसाने धर्मार्त: स्वक्षेत्र मध्ये वृक्षच्छायायां प्रसुप्त: अनतिदूरे वल्मीकोपरि प्रसारितं बृहत्फणायुक्तं भुजङ्गमं दृष्ट्वा चिन्तयामास – 'नूनमेषा क्षेत्रदेवता मया कदाचिदपि न पूजिता, तेन इदं कृषिकर्म विफलीभवति, तदस्या अर्हपूजामद्य करिष्यामि' इति अवधार्य कुतोऽपि क्षीरमादाय शरावे निक्षिप्य

वल्मीकान्तिकमुपागम्य उवाच – 'भो: ! क्षेत्रपाल ! मया एतावन्तं कालं न ज्ञातं यत् त्वमत्र वससि, तेन पूजा न कृता, तत्साम्प्रतं क्षमस्व' । एवमुक्त्वा दुग्धञ्च निवेद्य गृहाभिमुखं प्रयात । अथ प्रात: यावदागत्य पश्यति, तावद्दीनारमेकं शरावे दृष्टवान् । एवं च प्रतिदिनमेकाकी समागत्य तस्मै क्षीरं ददाति, एकैकञ्च दीनारं गह्णाति ।

अथ एकस्मिन् दिवसे वल्मीके क्षीरनयनाय पुत्रं निरूप्य ब्राह्मणो ग्रामान्तरं जगाम । पुत्रोऽपि क्षीरं तत्र नीत्वा संस्थाप्य च पुनर्गृहं समायात: । दिनान्तरे तत्र गत्वा दीनारमेकञ्च दृष्ट्वा गृहीत्वा च चिन्तितवान् – 'नूनं सौवर्णदीनारपूर्णोऽयं वल्मीक:, तदेनं हत्वा सर्वमेकवारं ग्रहीष्यामि' । एवं संप्रधार्य अन्येद्यु: क्षीरं ददता ब्राह्मणपुत्रेण सर्प: लगुडेन ताडित: । तत्सर्प: दैववशात् अमुक्तजीवित एव रोषात् तमेव तीव्रविषदशनै: तथा अदशत् यथा सद्य: पञ्चत्वमुपगत: । स्वजनैश्च क्षेत्रस्य काष्ठसञ्चयै: संस्कृत: । अथ द्वितीयदिने समायात: तस्य पिता सुतविनाशकारणं श्रुत्वा तथैव समर्थितवान् अब्रवीञ्च –

भूतान् यो नानुगृह्णाति ह्यात्मन: शरणागतान् ।
भूतार्थास्तस्य नश्यन्ति हंसा: पद्मवने यथा ।।

पुन: सब्राह्मण: प्रत्यूषे क्षीरं गृहीत्वा, तत्र गत्वा तारस्वरेण सर्पमस्तौत् । तथा सर्पश्चिरं वल्मीकद्वारान्तर्लीन एव ब्राह्मणं प्रत्युवाच – 'त्वं लोभादत्र आगत: पुत्रशोकमपि विहाय, अत:परं तव मम च प्रीतिर्नोचिता । तव पुत्रेण यौवनोन्मादेन अहं ताडित:, मया स दष्ट:, कथं मया लगुडप्रहारो विस्मर्तव्य: ? त्वया च पुत्रशोकदु:खं कथं विस्मर्तव्यम् ? इत्युक्त्वा बहुमूल्यं हीरकमणिं तस्मै दत्त्वा – 'अत: परं पुनस्त्वया न आगन्तव्यम्' इति पुनरुक्त्वा विवरान्तर्गत: । ब्राह्मणश्च मणिं गृहीत्वा पुत्रबुद्धिं निन्दन् स्वगृहमागत: ।

15. हरिदत्तसर्पयो: सम्बन्ध: कथं समजनि ?

16. हरिदत्तः सर्पं कथं पूजयामास ?

17. दीनारविषये ब्राह्मणपुत्रस्य चिन्ता का आसीत् ?

18. दीनारलोभात् ब्राह्मणपुत्रः किमकरोत् ?

19. पुनरागतस्य हरिदत्तस्य कृते सर्पस्य उपदेश: क: ?

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	
20	
21	
22	
23	
24	
25	
26	

Total Marks Obtained (in words) ....

(in figures) ....

Signature & Name of the Coordinator ....

(Evaluation) Date ....